जब पढ़े-लिखे आदमी पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ता है

श्रद्धेय मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली नदवी (रह०)
'अली मियाँ'

पयामे इंन्सानियत फ़ोरम
पोस्ट बॉक्स नं० 93,
लखनऊ 226007

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

इस समय देश में किया हो रहा है हम सब को इस पर विचार करना चाहिए। हमारा देश किस ओर जा रहा है इस देश की बिगड़ती स्थिति को देखते हुए देश का हर नागिरक परेशान है हमारे इस विशाल देश में कोई कमी नहीं है लेकिन हमारे देश में एहसास ज़िम्मेदारी की कमी है प्रेम और विश्वास की कमी है।

आज एक ग़लत नारा (स्लोगन) हम को पागल बना देने के लिए काफी है अचानक यह सब पढ़े लिखे न केवल पागल बन जाते हैं बल्कि पशु हो जाते हैं। अच्छा खासा आदमी जानवर (पशू) बन जाता है इन्सान अपने आप से बाहर हो जाता है।

इस समय पूरे भारत में नफ़रत की आग बुझाने और प्रेम का दीप जलाने की आवश्यकता है इस देश की नदियाँ पर्बत और देश के कण-कण तक देश वासयों से अनूरोध कर रही है कि आज इस देश में क्या हो रहा है मासूम बच्चों को अनार्थ होने से और महिलाओं को विधवा होने से बचाइये। हिंसा और टकराव का दानव हमारे सामने मुहँ खोले खड़ा है नफ़रत और हिंसा की आग हमारी समस्त परम्पराओं को जला देने पर तत्पर है, इस समय इन सबको समाप्त करने की आवश्यकता है।

मानवता सन्देश अभियान के संस्थापक और महान निचारक हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०) अली मियाँ

www.abulhasanalinadwi.org

ने वर्ष १९७४ ई० में इलाहाबाद से इस काम का शुभारम्भ किया उस के बाद देश का भ्रमण करके देशवासियों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया।

अप्रैल 16, 1978 को सीवान (बिहार) में और वहाँ जनता के निमंत्रण पर पधारे और एक विशाल सभा को सम्बोधित किया था इस सभा के समापति प्रसिद्ध साहित्याकार डा० वी० वी० मिश्रा थे।

हजारों की संख्या में लागों ने एकाग्रचित होकर भाषण को सुना। इस आयोजित समारोह में हिन्दू मुसलमान, सिख, ईसाई सभी थे, भाषण को अन्त तक लोगों ने अत्यन्त शान्ति पूर्वक सुना और बहूत प्रभावित हुए। समय की ज़रूरत और भाषण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए अबदुल हक़ (एम, ए) अध्यापक नदवा कालेज लखनऊ द्वारा सरल हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया जारहा है पहले भी यह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है मगर इस समय कम्प्यूटर कम्पोजिंग करके इस को पुनः प्रकाशित किया जारहा है आशा है कि यह देश की उन्नती में लाभदायाक सिद्ध होगी।

8-5-2006

पयामे इन्सानियत फ़ोरम

www.abulhasanalinadwi.org

प्रेम और विश्वास का मार्ग
मैं अपनी ख़ुशी छुपा नहीं सकता

सबसे पहले तो मैं आपके सामने अपनी इस ख़ुशी को व्यक्त करना चाहता हूँ और यह इन्सान की ख़ूबी है, उसकी कमज़ोरी नहीं हैं, यह इन्सान का नेचर है कि वह ख़ुश होता है तो अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करता है और उस को अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करना चाहिए। यह बिल्कुल बनावटी बात है कि आदमी ख़ुश हो और अपनी ख़ुशी को ज़ाहिर न करे। कभी तो यह कहना कि हम बहुत ख़ुश हुए हैं छोटी बात समझी जाती है, लेकिन मैं इसको ज़िन्दगी की अलामात (चिन्ह) समझता हूँ। मुर्दा अपनी ख़ुशी ज़ाहिर नहीं कर सकता न वह अपना दुःख ही ज़ाहिर कर सकता है, लेकिन आदमी जब तक जिन्दा है और उस की रगों में ख़ून दौड़ रहा है और सांस आ रही है और जा रही है, उस वक़्त तक वह अपने वातावरण से प्रभावित होता है। जब प्राण का अन्त हो जाता है, शरीर और आत्मा का नाता टूट जाता है तो फ़िर बाहर के हालात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, कोई साया नहीं पड़ता। इसलिए आप से मैं अपनी ख़ुशी छुपा नहीं सकता और इमे मैं किसी प्रकार की लज्जा भी अनुभव नहीं करता। मैं इस सभा को देखकर बहुत ख़ुश हूँ। इन्सान के

www.abulhasanalinadwi.org

लिए बड़ी दिल तोड़ने वाली बातें पेश आती हैं। और जिन्दगी नाम ही इसका है दिल को टुकड़े-टुकड़े करने वाली घटनाएँ भी पेश आती हैं। शीशे की तरह, काँच की तरह, दिल के सौ टुकड़े और हज़ार टुकड़े हो जाते हैं और दिल के टूटे हुये टुकड़ों को जोड़ने वाली बातें भी पेश आती हैं, ज़िन्दगी इन दोनों का संयोग है। इन्हीं के ताल मेल से, इसी के ताने बाने से अर्थात् दुःख देने वाली और सुख देने वाली घटनाओं से यह जीवन बना है तो किसी इन्सान के लिए इस से ज़्यादा दिल तोड़ने वाली और इस से ज्यादा उसको बुझा देने वाली और क्या बात होगी कि उसकी बात को सुनने वाला और उस की बात को समझने वाला न हो? सबसे बड़ी सज़ा इन्सान के लिए यह है कि आप कहीं उसको जंगल में डाल आइए, पहाड़ की चोटी पर बिठा दीजिए, जहाँ वह रोये तो कोई सुनने वाला न हो, वहाँ हँसे तो कोई देखने वाला न हो, सिवाय उस के पैदा करने वाले के कोई आदमी न उसकी बात सुनने वाला हो और न उस का दुःख बंटाने वाला हो, न उस को तसल्ली देने वाला हो, न उस के दर्द को सुनने वाला हो। इस से बढ़कर इन्सान के लिए कोई चीज़ दिल तोड़ने, वाली हतोत्साह वाली नहीं हो सकती। इसके मुक़ाबले में आप इन्सान से सब कुछ छीन लीजिए, लेकिन आदमियों की सहानुभूति उस को प्राप्त हो, इन्सान उस पर भरोसा करते हैं, तो यूँ समझिये कि उसको सब कुछ मिल गया, सारी दौलत मिल गयी। यह हमारी कविताएं, यह हमारा साहित्य, हमारे गीत,

www.abulhasanalinadwi.org

फ़ाईन आर्टस (ललित कलायें) यह हमारा विवेक, दर्शनशास्त्र, और यह हमारी टेक्नोलाजी इन सबकी जननी हमारी 'आशा' है। इन्सान को आशा होती है कि मैं एक कविता कहूंगा तो उसका कोई सुनने वाला और सुनकर झूमने वाला होगा। आर्टिस्ट तस्वीर बनाता है बड़ा निःस्वार्थ काम करने वाला है, उसको इसकी परवाह नहीं होना चाहिए कि लोग उसकी प्रशंसा करते हैं आलोचन करते हैं। उसके कार्य को सहारते हैं या उसकी मेहनत पर पानी फेर देते हैं लेकिन यह उसको मालूम हो जाय कि मेरी तस्वीर को देखने वाला और इसके हाव-भाव को समझने वाला कोई नहीं है तो उसका ब्रुश रुक जायेगा, उसका दिमाग़ नहीं चलेगा, उसके अन्दर जो मित्र बनाने की योग्यता है वह बुझ कर रह जायेगी, यह पुस्तकालय जो हमारे ज्ञान और विचार का भंण्डार है, सब इसी कद्रदानी (सराहना) का नतीजा है। हमारे सभापति जी भी एक बड़े लेखक हैं, मुझे मालूम हुआ कि इनका मन पसन्द कार्य अर्थात् हाबी लिखना-पढ़ना ही है, मैं इनको गवाह बनाना चाहता हूँ और अपने सामने इनसे पूछता है कि अगर इनको मालूम हो जाय कि इनकी किताबों के पढ़ने वाले नहीं हैं और इनकी भावनाओं की कोई प्रशंसा नहीं करता है तो क्या इनका क़लम चलेगा? क़लम को जो चीज़ चलाने वाली है वह लेखक की यह कल्पना है कि मैं अकेला नहीं हूँ। इन्सान के लिए सब से बड़ी सज़ा यह है कि वह समझने लगे कि मैं अकेला हूँ उसी यक़्त उसका दम घुटने लगेगा। इन्सान को ख़ुदा

www.abulhasanalinadwi.org

ने अकेला पैदा भी नहीं किया और अकेला रखा भी नहीं और ख़ुदा की यह इच्छा भी नहीं है कि वह अकेला रहे अगर ख़ुदा को उसको अकेला रखना होता तो उसको पहाड़ बना देता, पत्थर बना देता, हीरा बना देता, कान में कितने हीरे पड़े होते हैं, जवाहरात पड़े होते हैं, किसी को किसी की कोई फ़िक्र नहीं होती, लेकिन इन्सान को ख़ुदा ने इन्सानों के बीच पैदा किया और यह इन्सान का नेचर है कि वह आदमियों में ही रहना चाहता है। उसको अकेला घर काटने दौड़ता है, जेलखाना बन जाता है, अगर घर में अकेला हो। जेलखाने की क्या परिभाषा है, जेलखाने में किस बात की कमी है। हमारे मिनिस्टर साहब बैठे हुए हैं, हमारी हुकूमत है, हमारे देश की हुकूमत है। आज कल जेलखानों में आराम की सारी बातें हैं, स्पेशल क्लास हैं और कभी-कभी तो वहाँ वह आराम व सम्मान मिलता है जो अच्छे-अच्छे लोगों को अपने घरों पर नहीं मिलता है। लेकिन फिर भी जेलखाना-जेलखाना क्यों मालूम होता है? क्यूं लोग इससे घबराते हैं। क़ैदी मिलना चाहता है, मिल नहीं सकता, वह बात करना चाहता है, तो आदमी बात करने के लिए नहीं मिलते, उसका दम घुटने लगता है वह चिल्ला उठता है कि-

"यहाँ तो बात करने को तरसती है ज़बां मेरी"

मैं अध्यापक भी रहा हूँ और इस पर मुझे गर्व भी है, मेरा अनुभव है कि बच्चे की सबसे बड़ी सज़ा यह है कि उससे कहा जाय कि यहाँ बैठे रहो, कहीं जाना नहीं, उठना नहीं, बच्चे को

www.abulhasanalinadwi.org

आप दो थप्पड़ मार लीजिए, चार थप्पड़ मार लीजिए, थोड़ी देर रो कर ख़ुश हो जायेगा लेकिन बच्चे से कहिए यहाँ दो घंटे बैठे रहो तो बच्चे को ऐसा लगेगा कि बस अब जान निकल जायेगी ऐसा क्यों? इन्सान का नेचर है कि वह कुछ हिले-डुले वह कुछ बात करे, लेकिन अगर इन्सान अपने को अकेला महसूस करे तो इतनी ही बात से अन्दर ही अन्दर वह घुलने लगता है, उसका दम घुटने लगता है, जैसे मछली को आप पानी से निकाल कर रेत पर डाल दें और वह तड़पने लगे।

मैं आप से साफ़ कहता हूँ कि पढ़े-लिखे आदमियों हिन्दु-मुसलमान, सिख, ईसाई भाईयों की इतनी सूरतें देखकर मेरी आत्मा गदगद हो गई और मैं समझा हूँ कि मेरा ख़ून बढ़ गया।

हमारी आत्मा ख़राब नहीं। ऊपरी बातें ख़राब हैं। संसार का कारख़ाना विश्वास और भरोसे पर चल नहीं रहा है। इतने भाई आशा को लेकर और इतमिनान करके यहाँ आये इसका मतलब यह है कि हमारी आत्मा की बनावट में कोई ख़राबी नहीं है। हमारी ऊपर की चीज़ ख़राब हो गई है। हमारी आत्मा इतनी ख़राब नहीं हुई जितनी ज़बान ख़राब हुई है। मुझे कहने की आज्ञा दीजिए कि जितना हमारा दिमाग़ (मस्तिक) ख़राब हुआ है, और ये जो कुछ ख़राबी आज दुनिया में आप देख रहे हैं, वह अधिकतर मस्तिष्क की ख़राबी का परिणाम है। हमने ग़लत पढ़ा, ग़लत नतीजा निकला, हमने दुनिया का मतलब ग़लत समझा है, हमारी आत्मा सो गई है, जगाने से जाग सकती है।

www.abulhasanalinadwi.org

मैं अभी चार प्रदेशों का दौरा करके आ रहा हूँ। मैंने देखा परमात्मा ने हमें कितना बड़ा देश दिया है और कैसा हरा-भरा लहलहाता हुआ देश दिया है। हमारा सर ऊँचा है। हमारा देश किसी प्रकार भी किसी देश से कम नहीं है। कैसी हरयाली, कैसी लहलहाहट, कैसी उपज, कैसे सुन्दर दृश्य, और कैसी प्राकृतिक छटा, कैसे ऊँचे-ऊँचे पर्वत। यहीं नहीं संसार का सबसे बड़ा पर्वत हमारी धरती पर है, बहुत लम्बे दरिया हमारे देश में बहते हैं, और अनाज कितना पैदा होता है कैसे-कैसे फल परमात्मा ने पैदा किये हैं, और इन सबसे बढ़कर आदमियों की आबादी। यह आदमियों का जंगल है, कन्धे से कन्धा छिलता है, बाज़ारों में निकलना कठिन है, ट्रेफ़िक कन्ट्रोल करना मुश्किल है।

"प्रेम और विश्वास का मार्ग"

हमारे देश में कोई कमी नहीं है। लेकिन हमारे देश के अन्दर ज़िम्मेदारी और नागरिकता का एहसास यानी यह कि हम एक सज्जन और ज़िम्मेदार नागरिक हैं, पूरे तौर पर नहीं है। प्रेम की कमी है, विश्वास की कमी है, लोग डरे हुये से हैं, आदमी में इतमीनान नहीं है, यह भरोसा नहीं कि किस समय क्या हो जाये। अविश्वास की यह दशा, माफ़ कीजियेगा, हमारी राजनीतिक पार्टियों, पिछली हुकूमतों ने पैदा की है, इससे दिल पर चोट सी लगती है। यह सारी ख़राबी हमारी है। ख़ुदा की तरफ़ से कोई कमी नहीं है, न

www.abulhasanalinadwi.org

आसमान ने कमी की पानी बरसाने में, न जमीन ने कमी की ग़ल्ला (अन्न) उपजाने में। इतिहास के एक विद्यार्थी के नाते, और एक सत्य प्रेमी मनुष्य की हैसियत से मैं आप से कहता हूँ कि हमारा भारत अपनी बुद्धिमत्ता में और अपनी कार्यकुशलता में, अपनी अपनी सज्जनता में दुनिया के किसी मुल्क, से कम नहीं है। लेकिन इससे उतना फ़ायदा नहीं उठाया जा रहा है, जिस हद (सीमा) तक उठाया जा सकता था और उठाया जाना चाहिए था। किसी आदमी के पास कोई वस्त्र न हो तो तसल्ली हो जाती है कि भाई! नहीं है, ख़ुदा ने नहीं दिया है, ग़रीब है। उसको तसल्ली है कि दरिद्र घर में पैदा हुआ ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है, बुद्धिमान भी नहीं है, उसने मेहनत भी नहीं की है, वह अपने भाग्य पर संतुष्ट है, लेकिन जिसको परमात्मा ने सब कुछ दिया है और फिर वह उससे फ़ायदा न उठाये तो रह-रह कर उसको ख़्याल आता है और दिल मसोस कररह जाता है कि मैं क्यों फ़ायदा नहीं उठाता? मुझे क्यूं इसका अवसर प्राप्त नहीं होता? जो इसका सही हल है, वह मुझे क्यों नहीं हासिल होता? यही मेरा एहसास है। मैं भारत में आप सब लोगों से ज़्यादा फिरने वाला आदमी हूँ। मेरी ऐसी ही हालत है। मैं भारत के चप्पे-चप्पे में घुमा और कोने-कोने तक पहुंचा हूँ। कितना धनवान देश है। पृथ्वी की उपज से भी और खानों की पैदावार से भी। यहाँ अच्छी से अच्छी धातु पायी जाती है और इसमें तो आपके प्रदेश

www.abulhasanalinadwi.org

बिहार का नम्बर प्रथम है। कोयला सबसे ज़्यादा यहाँ निकलता है, लोहा यहाँ पैदा होता है, कैसे बड़े-बड़े कारख़ाने और तेल शोधक केन्द्र यहाँ मौजूद हैं, पेट्रोल चाहे बाहर से आये लेकिन साफ़ यहाँ किया जाता है। यहाँ से वह तमाम भारत में तक़सीम होता है। किसी चीज़ की कमी नहीं लेकिन फ़सादात (दंगे) यहाँ होते हैं, भाई-भाई का यहाँ शत्रु बन जाता है, पागलपन की लहर उठती है, दुष्ट एक नारा लगा देता है, सारे का सारा मुल्क़ उस वक़्क ऐसा हो जाता है, जैसे उसे किसी ने इन्जेक्शन दे दिया हो, या उस पर हिस्टीरिया (पागलपन) का दौरा पड़ गया हो। विद्यार्थी विद्यार्थी नहीं जान पड़ते, प्रोफ़ेसर, प्रोफ़ेसर नहीं मालूम पड़ते, विद्वान, विद्वान नहीं जान पड़ते। मैं जमशेदपुर, राउरकेला और रांची गया हूँ। यह देख कर मुझे दुःख ही नहीं हुआ अचम्भा भी हुआ कि आख़िर मनुष्य को क्या हो जाता है, यह आदमी इतनी जल्दी जानवर कैसे बन जाते हैं यह आदमी इतनी जल्दी जानवर कैसे बन जाते हैं। जानवर को इन्सान बनने के लिए बड़ी कठिनाई पेश आती है। चाहिए तो यह था कि जानवर के लिए इन्सान बनना आसान होता, इन्सान के लिए जानवर बनना मुश्किल होता। इसलिए अगर जानवर इन्सान बन जाये तो बड़ी अच्छी बात है। हमने कुछ पाया और कुछ हासिल किया लेकिन यदि इन्सान जानवर बन जाये तो इससे बढ़कर हमारा दुर्भाग्य और क्या होगा। मां के पेट से तो इन्सान पैदा हुए,

www.abulhasanalinadwi.org

माता-पिता ने आदमी का बच्चा समझ कर पाला-पोशा भोजन भी आदमियों के दिये और इसके बाद जब पढ़ने के योग्य हुआ था तो पढ़ने बिठा दिया गया। इसके सामने उदाहरण अच्छे-अच्छे आये, पुराना इतिहास आया तो अच्छा आया, पुरानी घटनायें आयीं तो अच्छी आयी। माता-पिता चाहे कम पढ़े हों अपने बच्चों को अच्छे से अच्छा बनाना चाहते हैं। यह मानव स्वभाव है, इसी कारण मानव ने बड़ी उन्नति की, माता-पिता की यह सदैव इच्छा रही है कि हमारा बच्चा हमसे आगे बढ़ जाये। मनुष्य किसी को अपने से बढ़ा हुआ नहीं देखना चाहता है। परंतु अपने बच्चे को अपने से बढ़ा हुआ देखना चाहता है। यह आदमी का नेचर है इसी का परिणाम है कि एक पीढ़ी पहली की पीढ़ी से अच्छी होती है और तीसरी पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से अच्छी होती है।

इन्सान पैदा हुआ तो इन्सान था इसके बाद जब उसको दूध पिलाया गया तो इन्सान के बच्चे की तरह पिलाया गया। गोदों में खिलाया गया तो इन्सान के बच्चे की तरह खिलाया गया गुलाब के फूल की भी वह सेवा नहीं होती जो इन्सान के बच्चे की सेवा होती है। फिर उस के बाद उसको पढ़ने बठाया गया तो इन्सान की तरह, फिर उसके लिए पुस्तकें लिखीं गयीं, उसके लिए पुस्तकालय बनाए गए, उसके लिए संस्थान खोले गए, उसके लिए तमाम संसार के बुद्धिजीवी, दार्शनिक और विद्वानों ने अपना मस्तिष्क निचोड़

www.abulhasanalinadwi.org

करके रख दिया। यह सारे काम आदमियों के ही तरह हुए। अब बच्चा स्कूल जाने के क़ाबिल हुआ तो आदमी के बच्चे की तरह स्कूल गया, वहाँ भी अध्यापकों ने आदमियों ही की तरह गले से लगाया और अच्छी से अच्छी बातें उसके कान में डालीं, अच्छी से अच्छी पुस्तकें उसको पढ़ायीं। ये शिक्षा मंत्री भी बैठे हुए हैं, यह जानते हैं कि हर साल पाठयक्रम में उन्नति की जाती है। शिक्षा के नये-नये अनुभव किये जाते हैं, नयी-नयी विचार धारायें आती हैं। अमेरिका, यूरोप ने जो नये-नये अनुभव किये, उनकी सबकी जांच की जाती है, जिससे शिक्षा की उन्नति हो और वह सरल हो जाये। यह सब आदमी ही के लिए होता हे। अब इस नवयुवक ने पढ़ा। इसके बाद वह विद्यालय से निकला, स्नातक किया और स्नाकोत्तर (एम.ए.) किया। अगर वह रिसर्च करना चाहता है, पी.एच.डी. होना चाहता है, पोस्ट ग्रेजुएट पाठयक्रम पूरा कर चुका है तो बाहर के विश्वविद्यालयों में गया। यह सब आदमियों ही की उन्नति की सीढ़ियाँ हैं।

आज एक ग़लत नारा (स्लोगन) हमको पागल बना देने के लिए काफ़ी है।

इसके बाद में आप से पूछता हूँ कि होता क्या है? लहर उठती है, पटना से, मुंगेर, किशन गंज से या उधर यू.पी. के बार्डर

www.abulhasanalinadwi.org

सीवान से या उसके आगे से अचानक यह सब पढ़े-लिखे न केवल पागल बन जाते हैं, बल्कि पशु बन जाते हैं। यह मेरे लिए पहेली है, जिसको बूझना चाहता हूँ। ऐसा कौन सा पेंच ढीला हो जाता है कि मनुष्य जो अपने सीने में इतनी विद्या लिए बैठा है। सागर का सागर पी गया। दर्शन (लॉजिक) इथिक्स पोलिटिक्स लिटरेचर कविता फ़ाइन आर्टस और मनोविज्ञान यह सब कुछ पढ़ने के बाद मुझे आप बताइये वह कौन सा धमाका होता है जिसके कारण अच्छा ख़ासा ख़ूंखार भेड़िया बन जाता है। इन्सान अपने आप से नहीं बल्कि अपने जामे से भी बाहर हो जाता है। विद्यार्थी, विद्यार्थी को मारता है, प्रोफ़ेसर, प्रोफ़ेसर को ढूंढ कर इशारा करता है कि देखो मेरा साथी यहाँ छुपा हुआ है। जिसने इस वर्ष तक प्रयोगशाला में उसके साथ काम किया। कांधा मिलाकर पुस्तकालय में बैठा, आज उसके विरुद्ध जासूसी करता है, यह क्या हो जाता है? यह इन्सानियत पर बिजली गिरी है। न्यूयार्क के बिजली घर पर बिजली गिरी, मैं उस समय न्यूयार्क के निकट फ़िलाडेलाफ़िया में था। मेरे समझ में आया पावर हाऊस भी अक़्ल (बुद्धि) नहीं रखता बिजली भी अक़्ल नहीं रखती। एक बेअक़्ल (बुद्धिहीन) बेअक़्ल पर गिर गया, लेकिन यह अक़्लमन्द (बुद्धिमान) अक़्लमन्द पर कैसे गिरता है (निरन्तर तालियां) बिजली तो बिजली है किसी को बेअक़्ल व बेशऊर (अबोध) पर क्रोध नहीं आता न कोई उसको बुरा-भला कहता है।

www.abulhasanalinadwi.org

इस बात को कुत्ता भी समझता है। आप कुत्ते को ढेला मारिये तो कुत्ता ढेले पर, पत्थर पर नहीं दौड़ता वह आप पर दौड़ेगा। अर्थात् कुत्ते को भी यह समझ है कि अपराध पत्थर का नहीं, आदमी है, आप मार कर देख लीजिए। कुत्ते की दुम आप के पैर के नीचे आ जाये तो आप बच नहीं सकते लेकिन अगर कुत्ते की दुम अगर किसी वृक्ष से फंस जाये तो कुत्ते को क्रोध नहीं आता, इसको ज़ीशऊर (विवेकशील) पर क्रोध आता है। उसके अन्दर ख़ुदा ने यह बुद्धि पैदा की कि ज़ीशऊर ही उत्तरदायी है। हमारे यहाँ गधे से ज़्यादा कोई मूर्ख जानवर नहीं समझा जाता। गधा भी यह बात समझता है लेकिन हम और आप क्यूं नहीं समझते? मुझे बताइये इन्सान इन्सान पर क्यों गिरता है, पहाड़ इन्सान पर गिरे माफ़ कर दिया जाये, पत्थर आदमी पर गिरे क्षमा किया जा सकता है, दरिया इन्सान पर गिरे माफ़ किया जाये, छत गिर जाती है, क्षमा की जा सकती है, आग लग जाती है माफ़ किया जा सकता है परन्तु इन्सान को क्षमा नहीं किया जा सकता है। इसलिए कि परमात्मा ने उसे बुद्धि दी है। ख़ुदा ने उसको ज्ञान दिया है, उसको दिल दिया है, उसको आत्मा दिया है, उसको आदमियों की तरह पाला गया है, लेकिन फिर भी आदमी, आदमी को नहीं समझता। मुझे आश्चर्य है कि एक आदमी अपने कार्यालय में बैठा हुआ है, अच्छा ख़ासा पढ़ा लिखा, क्वालीफ़ाइड (योग्य) आदमी है और इस काम के लिए बैठा

www.abulhasanalinadwi.org

हुआ है कि जब उससे कोई सेवा लेने आये, फाइल निकलवाने आये, कोई काम करवाने आये या कोई आर्डर लेकर आये तो वह तुरन्त आज्ञा पालन करे। जब कोई आदमी उसके पास पहुंचता है तो कार्यालय का अधिकारी अपने साथी से कहता है- "मोटा शिकार है" "मोटा असामी है" उसके नज़दीक जैसे एक आदमी नहीं मोटा सा चूहा आया। बिल्ली जिस प्रकार चूहे को आता हुआ देखे, इसी तरह इन्सान, इन्सान को देखता है, बड़ा मोटा शिकार है, बड़ा मोटा असामी है। पैसा इससे ख़ूब वसूल होगा। ऐ ख़ुदा के बन्दे! निर्दयी मनुष्य! तुझे तो दो चार पग आगे बढ़ कर जाना चाहिए था, उसको गले लगाना चाहिए था कि "मैं इसी सेवा के लिए यहाँ बैठा हूँ। ख़ुदा ने तुमको भेजा है, तुम यहाँ न आओ तो मैं बेकार हूँ। मैंने किस लिए भाड़ झोंका है, मैंने किस लिए आंखे फोड़ीं, मैंने इसलिए पढ़ा था इसीलिए आंखे ख़राब की थीं कि तुम जैसे आदमियों की सेवा करूं, घण्टा भर से हाथ पर हाथ रखे बैठा हुआ था, मेरा कोई काम नहीं था कि परमात्मा ने तुझको भेजा"।

फिर यह आने वाला कौन है, अपने माँ का लाल, जब यह बीमार हुआ था तो इसकी माँ ने रो-रो कर रात काटी थी और डाक्टर के घर पर जा-जाकर दुहाई दी थी, ख़ुदा के लिए मेरे इकलौते बेटे को बचा लीजिए। उसने रो-रोकर प्रार्थना की कि हे! भगवान मेरी जान ले ले और मेरे [illegible]

www.abulhasanalinadwi.org

इसकी जान बच जाये, यह बहुत लाडला था, अपने माँ-बाप की आँख का तारा था। अब वह आया है, तुम्हारे पास तो गोया एक चूहा आया है, एक मोटा शिकार आया है, तुम उसका ख़ून चूस लेना चाहते हो। इससे बढ़कर मानवता की गिरावट और क्या होगी? भेड़िया, भेड़िये के यहाँ चला जाये। भेड़िया उसको मारता नहीं, कुत्ता, कुत्ते के पास चला जाये तो कुत्ता उस पर हमला नहीं करता जब तक वह पागल न हो। एक इन्सान, एक इन्सान पर कैसे हमला करता है। यह वह पहेली है जो आज तक कोई बुझा न सका। मैं आज इस पहेली को आप से बुझना चाहता हूँ कि यह दौरे (फिट्स) कैसे पड़ते हैं। अगर किसी एक के दिमाग़ पर पड़ जाये तो उसका सब पढ़ा-लिखा नष्ट हो जायेगा। माता-पिता ने सिखाया वह सब भूल गया, जो अध्यापकों ने स्कूलों एवं कालेजों में सिखाया, वह सब भूल गया, जो किताबें पढ़ा था, बड़े उत्साह से पुस्तकालयों में जाकर अध्ययन किया था वह सब भूल गया एक मिनट में यह सब सफ़ाया कैसे हो जाता है।

''शिक्षा सब कुछ करती है, परन्तु आदमी को आदमी नहीं बनाती''।

इसकी वजह क्या हो कि वह पढ़ा-लिखा बन गया एजूकेटेड ;म्कनबंजमकद्ध बन गया, कल्चर्ड ;ब्नसजनतमकद्ध हो गया वेलरेड ;मसस तमंकद्ध और बड़ा लिबरल और बड़ा थिंकर

www.abulhasanalinadwi.org

;जीपदामतल्द्ध सब कुछ हो गया लेकिन आदमी न बन सका। शिक्षा सब कुछ करती है। लेकिन आदमी को आदमी नहीं बनाती तो फिर ये दो कौड़ी की नहीं, अमेरिका की शिक्षा, यूरोप की शिक्षा अगर मनुष्य को सभ्य नहीं बना सकती, अगर हृदय में मावनता का सम्मान नहीं पैदा कर सकती, अगर उसकी आत्मा को नहीं जगा सकती, अगर ख़ुदा का ख़ौफ़ हृदय में नहीं बैठा सकती, अगर मानव सेवा की लगन उसके अन्दर नहीं पैदा करती, तो इस शिक्षा से मूर्खता अच्छी। जब मनुष्य मूर्ख था तो मनुष्य की सुरक्षा करता था, आदमी की मान-मर्यादा के लिए जान दे दिया करता था। आदमी, आदमी के लिए पहरा दिया करता था, वह सोता था, यह जागता था, ताकि उसको कोई कष्ट न पहुँचे। वह युग अच्छा था, इस युग से जिसमें इतनी तालीम है, घर-घर शिक्षा है, गाँव-गाँव शिक्षा है, परन्तु इसका परिणाम क्या है, कोई धूर्त, कोई फ़सादी, एक नारा लगा देता है, चाहे वह राष्ट्रीयता का नारा हो, या वह कम्यूनिज़्म का नारा हो, वह बलवा करा देता है। मेरी समझ में नहीं आता कि इस राष्ट्र को कैसे सभ्य कहा जाये, जहाँ दिन-रात दंगे हों। सभ्यता और दंगे दोनों जमा (एकत्र) नहीं हो सकते। इन्सान, इन्सान का शिकार खेले, मानव, मानव के ख़ून से अपनी प्यास बुझाये, शर्म आनी चाहिए, ऐसे इन्सान को। वह मानव नहीं है,

www.abulhasanalinadwi.org

उससे बेहतर जानवर है। फाड़ खाने वाले जानवर इससे बेहतर होते हैं।

"इन्सान अन्दर से बनता है, बाहर से नहीं बनता"

बात यह है कि इन्सान अन्दर से बनता है, बाहर से नहीं बनता। हमने अन्दर को भुला दिया, हमने अन्दर के इन्सान को नहीं जगाया, हमारे इस इन्सान के अन्दर एक और इन्सान छुपा हुआ है। वह अन्दर का इन्सान है। वह दिल वाला इन्सान है, वह भगवान से डरने वाला इन्सान है क्योंकि वो आत्मा वाला इन्सान है। जब वह इन्सान जाग जाता है तो क्या होता हैं। बड़े-बड़े खुदा और बड़े-बड़े राज्य उसके हाथ में होते है। लेकिन उसका क्या हाल होता है, वह क़ौम (जनता) के पैसे को, मुल्क (राष्ट्र) के पैसे को राष्ट्र की धरोहर समझता है। वह समझता है कि पूरा राष्ट्र मालिक है और मैं अकेला सेवक हूँ, दास हूँ।

"इन्सानियत के अमूल्य नमूने"

दो घटनायें आपको सुनाता हूँ और माफ़ी चाहता हूँ प्रोफ़ेसर से कि मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ और मेरी पहुंच वहीं तक है। मैं ख़लीफ़ा (मुसलमानों के धार्मिक सरदार) का एक वाक़या (घटना) सुनाता हूँ।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ जब गद्दी पर बैठे यानी जब मुसलमानों ने उनको अपने रसूल हज़रत मोहम्मद सल० के बाद उनकी जगह पर अपना अगुवा और नेता मान लिया। उस वक़्त मुसलमानों की सेनायें एक ओर रोमन एम्पायर की ओर बढ़ रही थीं ताकि वहाँ के अत्याचार को दूर करें और आदमी को आदमी की दासता से निकालें। दूसरी तरफ़ परशियन एम्पायर भी इसी कार्य के लिए बढ़ रही थी। उस वक़्त कितना बड़ा ख़ज़ाना होगा मुसलमानों का। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ से उनकी पत्नी ने कहा कि आप जब से ख़लीफ़ा हुए हैं, मुसलमानों को जो कुछ भी लाभ हुआ हो, हम उससे इन्कार नहीं करते, लेकिन हमारा बड़ा नुक़सान हो गया। उन्होंने ने कहा कि क्या नुक़सान हुआ? पत्नी ने कहा कि आप ने घर के ख़र्च के लिए जो पैसे मुक़र्रर कराये जो हमको मुसलमानों के ख़ज़ाने से मिलते हैं, उससे बस इतना ही होता है कि उसमें हमारा और हमारे बच्चों का पेट भर जाये। कितने दिन हो गये आप को ख़लीफ़ा बने हुए, हम अभी तक कोई मीठी चीज़ न खा सके। हमारे मुँह का मज़ा ख़राब है। इससे तो हम उस वक़्त मज़े में थे, जब आप कपड़ों का व्यापार करते थे। अब आप ख़लीफ़ा हुए तो नाम तो बहुत ऊँचा हुआ, लेकिन हमारा कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उन्होंने ने कहा बेगम (श्रीमतीजी) मैं क्या करूं। मुसलमानों का माल इसलिए नहीं हैं कि मेरे घर वाले अपना मुँह

www.abulhasanalinadwi.org

मीठा करें। मुसलमानों के ख़ज़ाने में इतनी क्षमता नहीं है। पत्नी ने कहा हम इसी में से कुछ बचा लें तो आप को कोई आपत्ति तो नहीं होगी? इस पर आप ने कहा कि इसमें आपत्ति की क्या बात है। यह तो अच्छी गृहणी की योग्यता की बात है। दस दिन, पन्द्रह दिन, बीस दिन उस बेचारी ने पाई-पाई काटी और उसके बाद रुपया बारह आने लाकर दिया और कहा कि लीजिए! जो आप देते हैं, उसी से काट-काट कर यह रक़म मैंने जमा की है। इससे इतना घी, सूजी शक्कर मंगवा कर दीजिए। आप जानते हैं उन्होंने क्या किया? वह रक़म मुसलमानों के कोषा अध्यक्ष को दे दी और कहा कि यह बारह आने मेरी रोज़मर्रा के ख़र्चे से ज़्यादा हैं। इसको मुसलमानों के कोष में जमा कर दीजिएगा। यानी आप दस आने दिया करते थे तो अब आठ आने दिया कीजिए। इसलिए कि हमारी पत्नी ने सिद्ध कर दिया कि इतने कम पैसे दिये जायें तब भी गुज़ारा हो जायेगा। न कोई मरेगा, न घर में फ़ाक़ा होगा।

एक वाक़्या (घटना) और सुनाता हूँ। यह वाक़्या तो वह है जो हमारी आपकी सबकी मिल्कियत (प्रापर्टी) है। यह किसी ख़ास बिरादरी की सम्पत्ति नहीं। इन पर हमको, आपको और सबको गौरव का अधिकार है। इसलिए यह घटना इन्सानों की है। हम भी इन्सान हैं। वह भी इन्सान थे। हमारा सर ऊँचा होना चाहिए कि हमारे पूर्वजों में ऐसे लोग हुए हैं। जब पहली कांग्रेस सरकार स्थापित

www.abulhasanalinadwi.org

हुई थी तो गांधी जी ने कहा था कि हमारे मंत्रियों को वह जीवन अपनाना चाहिए जो हज़रत अबूबकर और हज़रत उमर का था।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़माने में इस्लामिक एम्पायर (इस्लामिक ख़िलाफत) इतना बढ़ गया था कि सीरिया, मिस्र (इजिप्ट), इराक़, स्पेन, तक पहुंच गया था। पूरा उत्तरी अफ्रीका उनके अधीन हो गया था। उस समय की एक घटना सुनाता हूँ। एक दिन रात को हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ काम कर रहे थे और आप के सामने सरकारी दिया जल रहा था। बिजली उस ज़माने में नहीं थी, मशाल और दिया जलता था। उसको सामने रखे हुए सरकारी काग़ज़ात और फाइले देख रहे थे, हस्ताक्षर कर रहे थे कि इतने में एक मित्र आ गये उन्होंने कहा कि लो खूब आये, आओ भाई! कहाँ से आये? वह जहाँ से आये थे, उस मुल्क का नाम लिया। आपने पूछा भाई! कहो वहां सब लोग खुश हैं सब को खाने को मिलता है। उन्होंने कहा कि ऐ! मुसलमानों के सरदार! सबने आपको सलाम कहा है और सब खुश हैं। सबको संतोष है, कोई किसी को दबाता नहीं। इसके बाद आने वाले ने पूछा, ऐ मुसलमानों के सरदार! कहिये, आप के घर में भी सब कुशल मंगल है। आपका फ़लां बच्चा कहाँ है? आपकी फ़लां लड़की कैसी है? बच्चे क्या पढ़ रहे हैं? ये पूछना था कि उन्होंने फूँक मारकर दिया बुझा दिया। आने वाले ने पूछा ख़ैरियत, क्या बात हुई? उन्होंने

www.abulhasanalinadwi.org

जवाब दिया कि अभी तक तो हम जन हित की बात कर रहे थे। अब तुमने हमारी घरेलू बात पूछी। इसलिए मैंने दिया बुझा दिया, यह दिया सरकारी है। मैं इसका तेल अपनी घरेलू बातचीत पर खर्च नहीं करना चाहता। नौकर से कहा हमारे घर का चिराग़ लाओ। वह लाया गया तो कहा अब बात करो, वह दिया तो मैंने सरकारी काम के लिए जलाया था, फाइले देख रहा था, तुम आये तो मैंने तुम्हारे देश की जहां से तुम आये हो, कुशलता पूछी, जो सरकारी काम है अब तुम क़िस्सा ले बैठे मेरे घर का, इन क़िस्सों के लिए मैं मुसलमानों का पैसा ख़र्च करना ठीक नहीं समझता। आज दुनिया में है कोई मिसाल (उदाहरण) इसकी अमेरिका के राष्ट्रपति हैं और रूस के भी और बड़े-बड़े अरब देशों के राष्ट्रपति हैं और बादशाह भी कोई इस स्तर (स्टैन्डर्ड) पर पूरा नहीं उतरता। सऊदी अरब, मिस्र, इराक़ ये सब मुसलमान बहुसंख्यक देश हैं। लेकिन किसी को ईमानदारी की हवा भी नहीं लगी। इसलिए कि जो शिक्षा रसूले ख़ुदा (ख़ुदा के दूत) ने अपने साथियों को दी थी वह इनको हरगिज़ प्राप्त नहीं हुई। मैं उनको जानता हूँ, मैं उनसे मिलता हूँ, मैं उनका आदर करता हूँ और वहाँ आराम से रहता हूँ, लेकिन मैं बात साफ़ ही कहूँगा।

www.abulhasanalinadwi.org

अब आपसे यह कहना चाहता हूँ कि अब आप इस मुल्क की ख़बर लीजिए। इंसान को इंसान बनाइये। अपने लाल, अपने कलेजे के टुकड़े को इन्सान बनाइये। हमने जो कुछ खोया है, अन्दर खोया है और हम तलाश कर रहे हैं बाहर। इस पर मुझे एक कहानी याद आ गयी, जो मैंने बचपन में सुनी थी।

"कोई साहब घर के बाहर कुछ ढूंढ रहे थे । कोई बड़े मियां थे, कायदा है कि ऐसे अवसर पर चलते हुए सभी ठहर जाते हैं और पूछते हैं कि आप क्या ढूंढ रहे हैं, क्या गिर गया है। उन्होंने कहा कि एक रुपया गिर गया है, मैं ढूंढ रहा हूँ, यह राही भी ढूंढने में लग गये। मगर वह रुपया मिल नहीं रहा था। राही ने पूछा, यह तो बताइये कहां गिरा था, हम ख़ास तौर से उसी जगह खोजें। उन्होंने कहा, "भाई! सच्ची बात तो यह है कि घर में गिरा था, घर में अंधेरा है, यहां रोशनी है, इसलिए यहां ढूंढने आया हूँ, रोशनी नहीं कि अन्दर ढूंढू।" आज हमारा आप सबका यही हाल है कि चीज़ खोई कहीं और है और ढूंढ रहे हैं कहीं और।"

"चीज़ जहाँ खोती है, वहीं मिलती है।"

चीज़ खोती है दिल में ढूंढ रहे हैं कालेजों में, पुस्तकालयों में, अमेरिका, यूरोप में विधान भवन में । और ख़ुदा का कानून यह है, ख़ुदा का कानून बदला नहीं करता, कि जो चीज़ जहाँ खोयी थी,

www.abulhasanalinadwi.org

वहीं मिलेगी। यह ख़ुदा का कानून है, हमेशा से है और हमेशा रहेगा कि जो चीज़ जहाँ खोयी है वहीं उसके तलाश करो। अगर अंधेरे में ही गिरी है तो वहाँ रोशनी ले जाओ। यह हो सकता है, लेकिन अंधेरे में गिरी है, इसलिए वहाँ तलाश नहीं करते हो और रोशनी में तलाश करने आये हो तो नहीं मिलेगी। (तालियों की गड़गड़ाहट)

तो भाई वह सीधे-सादे कोई बुज़ुर्ग थे, बड़े मियां थे, लेकिन आज तो बड़े-बड़े विद्वान और फ़िलास्फ़र यही कर रहे हैं। चीज़ खोयी है हमारे दिल में, हमारे हृदय में, हमारी आत्मा में और हम खोज रहे हैं, राजनीति में हम उसको तलाश कर रहे हैं नेतागिरी में और अध्ययन के स्थानों पर।

बस भाई! वह चीज़ खोयी है ख़त्म नहीं हुई है। खोयी हुई चीज़ मिल जाती है। मरी हुई चीज़ ज़िन्दा नहीं होती। मैं इन्सानियत (मानवता) को सोया हुआ समझता हूँ, मरा हुआ नहीं समझता। इन्सानियत सौ बार सोई, सौ बार जगाई गयी। ख़ुदा के पैग़म्बर (दूत) आये। बड़े-बड़े इल्म रखने वाले, बड़े-बड़े विद्वान ख़ुदा से डरने वाले आये। उन्होंने इन्सानियत (मानवता) को जगाया वह जाग गयी। अगर मर गयी होगी तो कभीं जीवित न होती।

"मानवता मरी हुई नहीं सोई हुई है।"

आज भी इन्सानियत मरी हुई नहीं हैं, सोयी हुई है।

www.abulhasanalinadwi.org

आइये! हम आप सब मिलकर सोई हुई इन्सानियत को जगायें। पहले अपने अन्दर जगायें, इसके बाद बाहर जगायें। हम अगर जागे हुए नहीं हैं तो दूसरों को भी जगा नहीं सकते। सोया हुआ सोये हुए को नहीं जगा सकता। एक जागता हुआ सैकड़ों सोये हुए को जगा देता है। लेकिन सौ सोये हुए एक को भी नहीं जगा सकते, अगर हम सब सो गये हैं तो हम सोते रहेंगे। हम एक-दूसरे को जगा नहीं सकते, हम में एक आदमी भी जाग उठे तो हज़ारों लाखों सोये हुए को जगा देगा।

यही आशा लेकर हम लोग फिर रहें हैं, हम इस मुल्क (देश) को बरबाद होता हुआ नहीं देख सकते। हमें यहाँ रहना भी है, सफ़र भी करना है, पढ़ना-लिखना भी है। आप जैसे लेखक और इतिहासकार भी हैं, विद्वान भी हैं। यह जो कुछ रौनक है, यह सब शान्ति की है। नार्मल ;छवतउंसद्ध हालात न होते, वर्षा का समय होता, बिजली चमक रही होती और पानी बरसने लगता, या एक धमाका होता तो सारी सभा विघटित हो जाती। अगर यहां एक सभा में एक सांप आ गया या कोई छछुंदर ही दिखाई पड़े तो अभी आप सब तितर-बितर होने लगेंगे। यह जो कुछ आप देख रहे हैं, यह सामान्य स्थिती का नतीजा है। अगर देश के हालात सामान्य रहेंगे तो आप इस देश को जितना चाहे ऊँचा कर ले जायेंगे। जितना चाहिए मुल्क को बढ़ाइये, ज्ञान-विज्ञान की खोज कीजिए।

www.abulhasanalinadwi.org

आप साइंस और टेक्नोलॉजी में इसको अमेरिका बना दीजिए, लेकिन यह सब सामान्य वातावरण में होगा। वहाँ भी सामान्य वातावरण में हुआ है। बस हम इसी के लिए फिर रहे हैं और अपना दुःख-दर्द दूसरों के सामने रख रहें हैं। अभी हम अपने आपको अकेला महसूस कर रहे हैं, हम तलाश कर रहे हैं पार्टियों में, लाइब्रेरियों में, लेकिन हमें विश्वास है कि हम अकेले नहीं हैं।

"निराश होने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं"

जब इतना बड़ा मजमा (जनसमूह) सीवान जैसे शहर में एक ज़रा सी आवाज़ पर जमा हो सकता है तो इस मुल्क में निराश होने की बिल्कुल ज़रुरत नहीं है। यह मुल्क जागृत है और ख़ुदा चाहेगा तो दूसरे मुल्कों को जगायेगा, ज़रुरत थोड़ी सी मेहनत की है। हमारे नेताओं ने देश निर्माण का कार्य तो किया लेकिन राष्ट्र का निर्माण का कार्य नहीं किया। गांधी जी करना चाहते थे, उनको पूरा अवसर नहीं मिला और इसके बाद जिन लोगों ने इस काम का इरादा किया वे इस राजनीति में फंस कर रह गये। मैं उनकी नियत पर चोट नहीं करता लेकिन यह काम रह गया है। अब काम हमारे आप के जैसे आदमियों का है। सारे मुल्क में आवाज़ लगाइये सारे मुल्क में इस मुहिम को (अभियान) चलाइये कि-

www.abulhasanalinadwi.org

ऐ आदमियों! ऐ इन्सानों! इन्सान बनो, एक-दूसरे का आदर करना चाहेंगे, लोग तुमसे नाजायज़ फ़ायदा उठाना चाहेंगे, लोग तुम्हारी सादगी का ग़लत प्रयोग (शोषण) करेंगे, लेकिन तुम ऐसा न होने देना। आपको यह बताना है कि अब दंगों का सिलसिला हमेशा के लिए बंद होना चाहिए। मानव, इन्सान को ख़ुदा की नेयमत समझें कि इसके बग़ैर जिन्दगी का मज़ा ही नहीं, अगर यह कला हमने सीख ली तो गोया हमने सब कुछ सीख लिया।